हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

एक दिन, चलते समय मेरी मुलाकात एक महिला से हुई जो अपने बच्चे के साथ थी। वह मेरे पास आई और विनम्रता से बोली कि उसे चानिका जाने के लिए बस का किराया चाहिए — 1,000 शिलिंग। संयोग से मेरे पास पैसे थे, इसलिए मैंने उसे दे दिए। यह एक साधारण-सा दयालु कार्य लगा — कुछ भी असाधारण नहीं।

लेकिन थोड़ी ही देर बाद, जब मैं स्वयं बस में चढ़ा, तो मुझे अचानक याद आया: मेरे पास नकद पैसे नहीं बचे थे। कंडक्टर किराया लेने आया, और मैंने घबराकर अपनी जेबें टटोलीं — कुछ नहीं। हालांकि मेरे फोन में पैसे थे, इसलिए मैंने उससे कहा, “अभी मेरे पास नकद नहीं है, लेकिन स्टेशन पहुँचकर मैं पैसे निकालकर दे दूँगा।”

दुर्भाग्य से, उसने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया। उसके चेहरे के भाव साफ बता रहे थे कि वह मुझे बहाना बनाते हुए समझ रहा था।

मैं चिंतित होने लगा। मेरा स्टॉप स्टेशन पर भी नहीं था; मुझे उससे पहले उतरना था। क्या कंडक्टर पैसे निकालने तक इंतज़ार करेगा? शायद नहीं।

तभी कुछ अप्रत्याशित हुआ। एक युवक — जो स्पष्ट रूप से बहुत साधन-संपन्न नहीं था — ने 1,000 शिलिंग निकाले और मुझे दे दिए। उसने कहा, “यह ले लीजिए। नहीं तो कंडक्टर आपको परेशान करेगा।”

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

मैंने विरोध किया, “कोई बात नहीं, मेरे पास पैसे हैं। स्टेशन पहुँचकर मैं दे दूँगा।” लेकिन उसने ज़ोर दिया। उसने प्रचुरता से नहीं, बल्कि करुणा से दिया।

उस अनुभव ने मुझे झकझोर दिया। मुझे एक गहरी सच्चाई का एहसास हुआ: हम अक्सर मान लेते हैं कि केवल ज़रूरतमंदों को ही मदद चाहिए, लेकिन जो सुरक्षित दिखाई देते हैं, वे भी अचानक आवश्यकता में पड़ सकते हैं।

कुछ ही मिनट पहले मैंने उसी राशि से एक महिला की मदद की थी — और अब मैं स्वयं सहायता का मोहताज था। यही पारस्परिक निर्भरता का ईश्वरीय सिद्धांत है। हममें से कोई भी पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं है।

धार्मिक (थियोलॉजिकल) चिंतन

पवित्र शास्त्र निरंतर सिखाता है कि हमारा जीवन गहराई से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। प्रेरित पौलुस लिखते हैं:

“एक-दूसरे का बोझ उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो।”

हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

गलातियों 6:2 (NIV)

हमें एक-दूसरे का सहारा बनने की आज्ञा दी गई है — केवल कठिन समय में ही नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के व्यावहारिक तरीकों से भी। आज जो मदद हम देते हैं, वही मदद कल हमें भी चाहिए हो सकती है।

आज आप पूरे आत्मविश्वास के साथ चल रहे हों — आपके पास कार हो, बैंक खाता भरा हो, स्वास्थ्य ठीक हो — लेकिन याद रखिए, ये आशीषें स्थायी नहीं हैं। वही हवा जो आज अनुग्रह लाती है, अचानक दिशा बदल सकती है। जैसा कि सभोपदेशक का लेखक कहता है:

“हवा दक्षिण की ओर बहती है और उत्तर की ओर घूम जाती है; वह घूमती रहती है और अपने मार्ग पर लौट आती है।”
सभोपदेशक 1:6 (NIV)

जीवन चक्रीय है। जो आज आपके पास है, वह कल न भी हो — और इसके विपरीत भी। आप धनी होकर भी भूख का अनुभव कर सकते हैं। आप स्वस्थ होकर भी बीमार पड़ सकते हैं। आप शिक्षित होकर भी स्वयं को पूरी तरह अज्ञान की स्थिति में पा सकते हैं।

हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

यीशु ने स्वयं उदारता का आदर्श प्रस्तुत किया और इसे सिखाया। मत्ती 25:40 में वह कहते हैं:

“मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों और बहनों में से किसी एक के लिए किया, वह तुमने मेरे
ही लिए किया।”
मत्ती 25:40 (NIV)

बस में उस युवक ने मुझे केवल पैसे नहीं दिए — उसने मसीह की आत्मा में मेरी सेवा की। उसने सुसमाचार को जीकर दिखाया।

नम्रता और करुणा का आह्वान

इस अनुभव ने मुझे याद दिलाया कि जो कुछ हमारे पास है, उसके हम मालिक नहीं, बल्कि भण्डारी (stewards) हैं। परमेश्वर हमें आशीष देता है ताकि हम दूसरों को आशीष दें:

“उन्हें भलाई करने, भले कामों में धनी होने, उदार और बाँटने
के लिए तत्पर रहने की आज्ञा दो।”

हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

1 तीमुथियुस 6:18 (NIV)

हमें कभी यह नहीं मानना चाहिए कि क्योंकि आज हम “सुरक्षित” हैं, इसलिए हम दूसरों की ज़रूरतों से ऊपर हैं। सच्ची मसीही परिपक्वता नम्रता से पहचानी जाती है — इस समझ से कि हमारे पास जो कुछ भी है, वह परमेश्वर के अनुग्रह से है।

कभी भी घमंड या आत्मनिर्भरता को हमें दूसरों की सहायता करने से न रोकने दें। इसके बजाय, हम देने में तत्पर हों, न्याय करने में धीमे हों, और सेवा के लिए सदैव तैयार रहें — क्योंकि एक दिन, संभव है कि वही सहायता हमें स्वयं चाहिए हो।

“धन्य हैं वे जो दयालु हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।”
मत्ती 5:7 (NIV)

प्रार्थना

प्रभु हमें सिखाएँ कि हम एक-दूसरे के साथ नम्रता से चलें, बिना हिचकिचाहट के दया दिखाएँ, और उनके प्रेम व संसाधनों के विश्वासयोग्य भण्डारी बनें। और हमें ऐसे लोग बनाएँ जो मसीह के

हमें हमेशा एक-दूसरे की आवश्यकता रहेगी — एक धार्मिक
(थियोलॉजिकल) चिंतन

हृदय को प्रतिबिंबित करें — असुविधा में भी देने वाले, और इस भरोसे में जीने वाले कि जब हम दूसरों की ज़रूरतें पूरी करते हैं, तब परमेश्वर हमारी ज़रूरतें पूरी करेगा।

शलोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp